☆अभ्यास में तरक्की की परख☆

कुछ सत्संगी जिनको सदगुरु की शरण में आये केवल दो चार वर्ष ही हुए हैं, वे अपने अन्तर में तरक्की यानी अपने मन को अन्तर्मुखी हुआ कम पाते हैं या नहीं पाते हैं. यह विचार ठीक नहीं है क्योंकि उनको अपनी हाल की परख नहीं है या कि उनको अपने मौजूदा हाल और पिछले हाल की जानकारी ठीक -ठीक नहीं है जो कोई भी सच्चे मन और सच्चे शौक से संतमत् को अखत्यार करके प्रेम से थोड़ा बहुत अभ्यास दो मरतबा हर रोज़ सुरत शब्द मार्ग और सुमरन और ध्यान कर रहा हैं तो यह नहीं होगा कि वह सतपुरुष दयाल की दया से ख़ाली रहे . उसे थोड़ा बहुत रस और आनन्द भजन और ध्यान का ज़रूर आवेगा.

उसका मन थोड़ा बहुत निश्चल होकर अभ्यास में लगने लगेगा. शब्द पहले मुक़ाम का जागृत हो जायेगा और अभ्यास के बक्त मन और सुरत शब्द की डोर का आनन्द लेते हुए, इस कदर अन्तर में लग जावेंगे कि दुनियाँ की भी ख़बर और सुधि नहीं रहेगी यानी दुनियाँ से मन कमज़ोर पड़ता जायेगा. ऐसी हालत का कभी - कभी या रोज़मर्रा हो जाना बहुत खुशकिस्मती है. सतगुरु सतपुरुष दयाल अभ्यास की चाल के मुआफ़िक जैसा मुनासिब समझते हैं तरक्की देते हैं, यानी उसके मन और सुरत का सिमटाव और चढ़ाई करते जाते हैं. इसका सरूर भी उसको अपनी दया से थोड़ा बहुत हज़म कराते जाते हैं, नहीं तो इस कदर रस पाकर बहुतेरे अभ्यासी मस्त होकर घर - बार और कारोबार छोड़ने को तैयार हो जावें. उनकी अवधूत की सी हालत हो जावे.

जिन प्रेमियों को अपने अभ्यास के समय ऐसी हालत की पहिचान कम हो तो उसकी वज़ह यह है कि उसको संसारी विचार अक्सर भजन और ध्यान में सताते हैं. उसको चाहिए कि वह अपनी एक या दो वर्ष गुज़री हुई पहले की हालत से मुक़ाबिला करे और यदि वह सच्चा सत्संगी और सच्चा अभ्यासी है तो उसको और उसके घर वालों को इस कदर ज़रूर मालूम पड़ेगा कि पहले की निस्वत उसकी तबियत संसारी लोगों के संग में और संसारी बातों में कम लगेगी. वह दुनियावी विचारों से भी छूट पाने लगेगा, फ़िज़ूल और नामुनासिब चाहें और दुनियाँ के भोगों की तरंगे कम होती जावेंगी. उसका जीवन सरल बनता जावेगा. सत्संग, वाणी और गुरु वचन में और सतनाम में उसकी प्रीती और प्रतीती पहिले से ज़्यादा होती जायेगी . इस समय सतनाम की विशेष महिमा है. सतपुरुष दयाल अपने सच्चे परमार्थी जीवों को ऐसे रास्ते और ऐसी युक्ति से चलाते और चढ़ाते हैं कि जिससे उनके दुनियावी किसी कारोबार में हर्ज़ भी न होवे और परमार्थ में आला दर्जा सहज में बेमालूम हासिल होता जावे.

सच्चे और प्रेमी अभ्यासी को चाहिए कि वह सत्संग में बैठकर अच्छी तरह से निर्णय कर ले और इन पाँच बातों को गौर से सुनकर, समझकर अपने मन के भरम, संदेह और शकों को जिस कदर जल्दी हो सके दूर करे वरना वह अभ्यास में बाधा डालेंगे और मन और सुरत को सफ़ाई और शौक के साथ भजन और ध्यान में लगाने नहीं देंगे. ये पाँच बातें निम्नलिखित हैं :

१. इस बात का निश्चय कि केवल सतगुरु दयाल ही कुल मालिक और सर्वसमर्थ हैं. कुल रचना के सच्चे माता पिता वही हैं.

२. यह कि सुरत शब्द मार्ग सच्चा, पूरा, और सहज धुरपद तक पहुँचाने वाला रास्ता और तरीका अभ्यास का है. असली परमार्थ वहाँ शुरु होता है जहाँ दीन और दुनियाँ का अन्त है. अपने को राम - चरित्र के आदर्श तक पहुँचाना केवल इस दुनियाँ में धर्म के शिखर तक पहुँचना होता है.

३. यह कि मन और इंद्रियों का स्वभाव माया के मसाले का है और इस वास्ते उनका असली झुकाव बाहर और नीचे की तरफ़ संसार के भोग और पदार्थों में है. मन का फ़िज़ूल तरंगे और ज़रूरत से ज़्यादा चाहें उठाने में हर्ज़ और नुक़सान है. इसलिए अभ्यासी को थोड़ा बहुत शौक और सम्भाल अपने मन और इंद्रियों की, खासकर वक्रत अभ्यास के बहुत ज़रूरी है, नहीं तो भजन और ध्यान का रस जैसा चाहिये वैसा नहीं आवेगा.

४. यह कि दुनियाँ और दुनियाँ परस्त और गैर - ख़्याल वालों के संग से और धन वालों की मुहब्बत और संग से सच्चे मालिक के चरणों के प्रेम में और अभ्यास में बिघ्न और ख़लल पड़ता है. इसलिए यह ज़रूरी है कि ऐसे जीवों का संग और मुहब्बत उसी क़दर रखी जावे जिस क़दर ज़रूरी है और मुनासिब है. उसमें अपने दिल को बांधना या अपना वक्रत बेफ़ायदा उनके संग में या दुनियाँ की गप - शप में ख़र्च करना अभ्यासी को ठीक नहीं है. जिन लोगों को किताबें पढ़ने का शौक़ होता है वे वक्रत को बहुत सम्भाल कर ख़र्च करते हैं यानी सिवाय रोज़गार और देह और गृहस्थ के ज़रूरी कामों के बाकी वक्रत किताबों में बिताते हैं, तो फिर परमार्थी अभ्यासी को किस क़दर ख़्याल अपने क्रीमती वक्रत का होना ज़रूरी है, गौर तो कीजिये .

५. सतनाम में प्रीति और प्रतीत और सतगुरु दयाल के चरणों में सच्ची शरण और उनकी दया और मेहर का आसरा और भरोसा सदा रखना .

राम संदेश : जनवरी - फरवरी २००७